डिजिटल युग में पारम्परिक कला का बदलता स्वरूप और विकसित भारत

डॉ० बबीता
असिस्टेंट प्रोफेसर, (चित्रकला विभाग), जे०वी० जैन कॉलेज सहारनपुर (उ०प्र०)
Email: mrsbabitachauhan@gmail.com

सारांशः– किसी भी समाज की कलात्मक परम्परा उसके सांस्कृतिक ढांचें का निर्माण करती है। भारत आदि काल से ही कला और संस्कृति के संगम का केन्द्र रहा है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश में पारम्परिक, कला केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नही है अर्पितु सांस्कृतिक रूप अस्मिता, सामुदायिक ज्ञान तथा, ऐतिहासिक निस्तरता की प्रतीक रही है। डिजिटल क्रान्ति के इस युग ने वैश्विक समाज ने अर्थव्यवस्था और संस्कृति को अत्यन्त गहराई तक प्रभावित किया है। आज के डिजिटल युग ने पारम्परिक कला के स्वरूप, सरंचना, अभिव्यक्ति और प्रचार–प्रसार के विविध आयामों को मूलतः परिवर्तित कर दिया है। तीव्र गति से बदलते डिजिटल युग में पारम्परिक कला के क्षेत्र में अनेक नाटकीय ढंग से बदलाव आ रहें है। प्रौद्योगिकी और नवाचार के इस समय में जैसे नवाचारों की कोई सीमा नहीं है वहीं पुरानी सीमाएं धुन्धली सी होती जा रहीं है। सोशल मीडिया इन्टरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वर्चुअल रियलटी तथा ब्लॉक चैन जैसी तकनीकों ने पारम्परिक कला विधाओं को एक नया स्वरूप प्रदान किया है। 21वीं शदी का डिजिटल युग व्यापक परिवर्तन का युग है। विकसित भारत की परिकल्पना मात्र आर्थिक प्रगति और विकास तक ही सीमित नही है, अपितु सांस्कृतिक सशक्तिकरण से भी जुड़ी है। प्रस्तुत शोध– पत्र का मूल उद्देश्य डिजिटल प्रौद्योगिकी का पारम्परिक कला के बदलते स्वरूप और उसकी विकसित भारत के निर्माण में योगदान का अध्ययन करना है।

[Babita. डिजिटल युग में पारम्परिक कला का बदलता स्वरूप और विकसित भारत. *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2026; Volume 2, Issue 1 (April-June): Page Number: 77-81. ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 6.489

प्रमुख शब्द, डिजिटल युग, पारम्परिक कला, सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था, विकसित भारत तथा आत्मनिर्भरता

प्रस्तावनाः– 21 वीं शदी का युग डिजिटल क्रान्ति का युग है। इस समय समाज विभिन्न डिजिटल परिवर्तनों के दौर से गुजर रहा है। स्मार्ट तकनीक और इन्टरनेट के विस्तार ने पाम्परिक कला की स्थानीय सीमाओं के बन्धन से मुक्त करके विश्व मंच पर स्थापित कर दिया है। आज कलाकार अपनी कृतियों को विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्म के माध्यम से न सिर्फ भारत बल्कि विश्व स्तर पर साझा कर रहा है। पूर्व में जैसे पारम्परिक कला कला भारतीय समाज की ऐतिहासिक स्मृति एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण की वाहक के रूप में पहचानी जाती थी। आज रचनात्मक अभिव्यक्तियों के सृजन उपयोग और आदान प्रदान को डिजिटल युग ने एक बार फिर नये ढंग से परिभाषित किया है। डिजिटल युग के विभिन्न माध्यमों ने कला की पारम्परिक अवधारणाओं के समक्ष एक गम्भीर चुनौती भी प्रस्तुत कर दी है। विकसित भारत की संकल्पना जिसे वर्तमान के वर्षों में राष्ट्रीय विकास के दीर्घकालिक दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत आर्थिक विकास के साथ सांस्कृतिक विकास पर बल दिया जा रहा है। अतः स्पष्ट है कि

Paper: Received: 03.06.2026 Reviewed: 11.06.2026 Accepted: 18.06.2026 Published: 27.06.2026

पारम्पारिक कला के डिजिटल रूपान्तरण की भूमिका का सम्यक अध्ययन किया जाए।

विधितन्त्रः– प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन गुणात्मक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। जिसके लिए द्वितीयक स्रोतों जैसे ई–जर्नल, शोध–पत्र, सरकारी रिर्पोट, प्रमाणिक पुस्तकें विभिन्न पत्र–पत्रिकाऐं तथा डिजिटल स्रोत वेबसाइट, ऑनलाईन गैलरी, सोशल मीडिया प्लेटफार्म का सहारा लिया जायेगा।

अध्ययन का उद्देश्यः– प्रस्तुत शोधपत्र के निम्नलिखित उद्देश्य है। जैसे पारम्परिक कला के स्वरूपों में परिवर्तन का विश्लेषण करना, विकसित भारत की संकलपना में पारम्परिक कला की भूमिका, विभिन्न डिजिटल माध्यमों के द्वारा आर्थिक सशक्तिकरण का अध्ययन, डिजीटल कला के माध्यमों से पारम्परिक कला के क्षेत्र में उत्पन्न चुनौतियाँ तथा नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना इत्यादि।

डिजिटल–युग में पारम्परिक कला का बदलता स्वरूपः– पारम्परिक कला पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती आई है स्थानीय संसाधन, प्राकृतिक रंग पारम्परिक तकनीको तथा सांस्कृतिक प्रतीकों का उपयोग इसमें प्रमुखता से होता आया है। भारतीय संदर्भ में पारम्परिक कला का स्वरू अत्यन्त ही विविधतापूर्ण है। उदाहरण के लिए जैसे मधुबनी मिथिला की सांस्कृतिक पहचान को अभिव्यक्त करती है। इसी प्रकार थारू जनजातीय समाज भारत के तराई क्षेत्र की प्रकृति, लोक–जीवन लोकगीत नृत्य कथाओं आदि का चित्रण प्रस्तुत करती है। शास्त्रीय नृत्य रूपों जैसे कथक और भरतनाटयम सौन्दर्य एवं आध्यात्मिकता के अद्भुत समन्वय को दर्शाता है। पारम्परिक कलाओं का सामाजिक महत्व भी होता है जो अनेक स्तरो पर परिलक्षित होता है। जैसे किसी क्षेत्र विशेष की कला उस समुदाय विशेष की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान की प्रतीक होती है तथा यह सामाजिक मूल्यों, लोक कथाओं धार्मिक प्रसंगों और प्रतीकों के माध्यम से समाज में नैतिकता, सहयोग, श्रद्धा और प्रकृति–प्रेम जैसे मूल्यों का संचार करती है। उत्सवों, मेलों और धार्मिक आयोजनों में कला का प्रदर्शन सामूहिक अनुभव का सशक्त माध्यम होती है। आर्थिक दृष्टिकोण से पारम्पारिक कला का महत्व हस्तशिल्प लोक चित्रकला, पारम्पारिक वस्त्र उद्योग आदि है जो मुख्य रूप से ग्रामीण अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है। पर्यटन उपयोग में भी पारम्पारिक कला आकर्षण का केन्द्र होती है। कलात्मक परम्पराएं बदलती रही है और बदलती रहेंगी क्योंकि रचनात्मकता निरन्तर विकसित होने वाली घटना है डिजिटल युग में आज हमारी पारम्परिक कला एक और परिवर्तन की दहलीज के कगार पर खड़ी हैं। डिजिटल इंटरफेस के माध्यम से विभिन्न कलाप्रवीण तकनीकों को जोड़ने का क्रान्तिकारी विचार अनेक क्षेत्रों में कई कलाकारों द्वारा तेजी से अपनाया जा रहा है।

मूर्तिकार, कलाकार, चित्रकार, लेखक, डिजाइनर, मिट्टी के बर्तन, काँच के बर्तन आदि के कारीगर, बुनकर, वास्तुकार आदि शामिल है। विभिन्न डिजिटल उपकरणों और कम्प्यूटर कोड का उपयोग करके डिजिटल कलाकार विशिष्ट डिजाइन, टैबलेट आदि के माध्यम से अपनी अनूठी कला–कृतियाँ बनाने में सक्षम है। कला का डिजिटलीकरण कालाकार को अत्याधिक विविधता और सहयता प्रदान कर रहा है। विजुअलाइजेशन के साथ प्रयोग विभिन्न विषयों के मिश्रण में सक्षम बनाता है। आधुनिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से आज कला की उत्कृष्ट कृतियों को बनाने और लोकप्रिय बनाने की अपार सम्भावनाएं हैं। यदपि जिटल एन्हांसमेंट तकनीक इनकी यात्रा को मानव जाति के साथ समन्वयित रखने में सहायक है।

डिजिटल युग ने मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। अतः पारम्परिक कला भी इससे अछूती नहीं रह पाई है। सूचना और प्रौद्योगिकी के विभिन्न

https://ijioa.com/ cosmospub2023@gmail.com

Paper: Received: 03.06.2026 Reviewed: 11.06.2026 Accepted: 18.06.2026 Published: 27.06.2026

प्लेटफॉर्मो के विकास ने केवल पारम्परिक कला के स्वरूप ही नहीं अपितु प्रस्तुति और प्रसार के तरीकों में भी व्यापक स्तर पर परिवर्तन किये है। आज कलाकार अपनी कलाएँ इन्स्टाग्राम और यू–ट्यूब जैसे प्लेटफार्म के माध्यम से प्रदर्शित कर अन्तर्राष्ट्रीय दर्शकों से जुड़ रहा है। पहले जहाँ चित्रकारी कागज, कपड़े या दीवारों तक ही सीमित थी आज वही कला डिजिटल टैबलेट और ग्राफिक सॉफ्टवेयर के माध्यम से तैयार होती है। पारम्परिक डिजाइनों को डिजिटल प्रिंट, एनीमेशन और एन०एफ०टी० के रूप में भी प्रस्तुत किया जा रहा है। जिसके द्वारा कला के संरक्षण और पुर्ननिमार्ण की सम्भावनाओं में वृद्धि हुई है। कोविड–19 के समय वर्चुअल प्रदर्शन और ऑनलाईन कार्यशालाओं ने यह सिद्ध कर दिया की डिजिटल माध्यम भी पारम्परिक कला के प्रचार और प्रसार में सहायक सिद्ध हो सकते है। डिजिटल बाजार ने पारम्परिक कलाकारों के लिए अनेक नये आर्थिक द्वार खोले हैं। ई–कामर्स प्लेटफार्म के माध्यम से कलाकार स्वयं सीधे ग्राहकों के घर तक पहुँच रहे हैं। मध्यस्थों की भूमिका खत्म हो रही है और आय के नये स्रोत विकसित हो रहे हैं। कलाकार स्वयं अपनी व्यक्तिगत पहचान स्थापित कर पा रहा है। फिर भी प्राचीन भारतीय परम्पराओं के प्रति समर्पित प्रेमियों के लिए डिजिटल युग अनेक चुनौतियाँ भी प्रस्तुत कर रहा है। इससे पारम्परिक कला की मौलिकता और हस्तनिर्मित पहचान के क्षरण का खतरा उत्पन्न हो रहा है।

विकसित भारत के विकास में पारम्परिक कला की भूमिकाः– प्राचीन समय ही भारत में पारस्पारिक कलाओं से जुड़े लाखो कलाकार, कारीगर, शिल्पकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाते आये है। लोक चित्रकला, हस्तशिल्प, वस्त्र निर्माण, और पारम्परिक सजावट की वस्तुओं का उत्पादन रोजगार सृजन का एक महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। विशेषतौर से ग्रामीण महिलाऍं तथा वंचित वर्ग के व्यक्तियों के लिए पारस्परिक कला आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करती है। विकासित भारत की संकल्पना मात्र, भारत के आर्थिक विकास तक ही सीमित न होकर भारत की सांस्कृतिक, समृद्धि और आत्मनिर्भर एवं विश्व स्तर पर पहचान से जुड़ी है।

पारम्परिक कला आर्थिक दृष्टि से रचनात्मक उद्योग का महत्वपूर्ण अंग है। भारतीय हस्तशिल्प और लोककला की माँग अन्तराष्ट्रीय बाजारों में निरन्तर बढ़ती जा रही है। डिजिटल प्लेट फार्म के माध्यम से पारम्परिक कलाओं को लोकल टू–ग्लोवल पहचान मिलने लगी है। जिससे भारत को विदेशी मुद्रा प्राप्ति के अवसर बढ़ने लगे है। यही भविष्य में विकसित भारत की आर्थिक संरचना को मजबूती देने का आधार बनेगा। यदि सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अध्ययन करें तो यह कला भारत की साफ्ट पावर को सुदृढ करती है। सांस्कृतिक आदान–प्रदान के कार्यक्रम, अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव और कला प्रदर्शनियाँ भारत की छवि को विश्वस्तर पर मजबूती प्रदान करती हैं। सामाजिक और शैक्षिक स्तरों पर भी पाम्पारिक कला अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा विद्यालयों में कला शिक्षा से रचनात्मकता संवेदनशीलता और आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करती है तथा हमारी वर्तमान और भावी पीड़ी को अपनी जड़ों से जोडने में मदद करेगी। इसके अतिरिक्त परम्परागत कला पर्यटन उद्योग, को बढ़ावा देने में भी पूर्णतः सक्षम है। जिसका प्रभाव ग्रामीण पर्यटन पर स्पष्ट नजर आने लगा है। यह क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहित करने में पूरी तरह सक्षम है। अतः पारम्परिक कला का यह बदलता स्वरूप भारत को एक विकसित राष्ट्र के रूप में पहचान उसकी सांस्कृतिक विविधता और रचनात्मकता से भी निर्मित होगा।

Paper: Received: 03.06.2026 Reviewed: 11.06.2026 Accepted: 18.06.2026 Published: 27.06.2026

डिजिटल युग में पारम्परिक कला के समक्ष उत्पन्न चुनोतियाँः– यदपि डिजिटल क्रान्ति के युग ने पारम्परिक कला को विश्व स्तर पर स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। करोड़ो दर्शक और अनेको आर्थिक अवसर प्रदान किये है परन्तु फिर भी इसके साथ–साथ अनेको चुनोतियाँ भी उत्पन्न कर दी हैं। यदि समय रहते इनका समुचित समाधान नहीं किया गया तो यह पारम्परिक कला की मौलिकता के लिए गम्भीर खतरा उत्पन्न कर सकती है। जैसे–

1. पारम्परिक कला की सबसे मुख्य चुनौती इसकी मौलिकता एवं प्रमाणिकता है। विभिन्न डिजिटल माध्यमों द्वारा उनकी नकल तथा व्यावसायिक उपयोग मूल चित्रकार की बिना अनुमति के किया जाने से उसकी मौलिकता पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है, और हस्तनिर्मित कला की पहचान कमजोर हो जाती है।
2. इन्टरनेट के द्वारा विभिन्न कलाकृतियाँ सरलता से डाउनलोड और सांझा की जा रही है। जिसके कारण डिजायन की चोरी ओर अवैध रूप उनका पुर्ननिर्माण होता है। परम्परागत कलाकार सामान्यत कानूनी प्रक्रियाओं से अनभिज्ञ होने के कारण अपने अधिकारो को सुरक्षित नहीं कर पाता और आर्थिक हानि का शिकार होता है।
3. कभी–कभी अधिक लोकप्रियता पाने और आर्थिक लाभ बढ़ाने के कारण पारम्परिक कला को सरल और आधुनिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसके कारण उसका मूल अर्थ और सांस्कृतिक गहराई कम हो जाती है। जैसे कथक और भारतनायम् आदि।
4. पारम्परिक कलाकार अधिकाशतः ग्रामीण पृष्ठभूमि से आते हैं। जिनके पास तकनीकी ज्ञान का अभाव होता है और वे डिजिटल उपकरणों का पूर्णतः लाभ नही उठा पाते।
5. कला की ऐतिहासिक और आध्यात्मिक पृष्ठभूमि कमजोर पड़ती जा रही है।
6. डिजिटल प्लेटफार्मो द्वारा पारम्पारिक कला को अधिक रोमांचक और सुलभ बनाने के चक्कर में कभी–कभी दर्शकों को अवास्तविक जानकारी प्राप्त होती है जिससे सच्ची कला अपने मूल उद्देश्य को प्रस्तुत करने में असफल हो जाती हैं।

नीतिगत सुझावः– विकसित भारत की उन्नति एवं विकास के लिए आवश्यक है कि डिजिटल युग में पारम्परिक कला के संरक्षण के लिए सुनियोजित प्रयास किए जाएँ क्योंकि पारम्परिक कला न सिर्फ सांस्कृतिक समृद्धि को सुद्धढ़ करेगी अपितु रोजगार निर्यात और रचनात्मक उद्योगों के द्वारा राष्ट्र की अर्थव्यवस्था में अपना प्रमुख योगदान देगी। प्रमुख सुझाव निम्नलिखित है।

1. ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाएँ जिससे पारम्परिक कला से जुड़े कलाकारों और चित्रकारों को ऑनलाईन तकनीकों का समुचित ज्ञान हो।
2. पारम्परिक कलाओं प्रतीकों की सुरक्षा हेतु कॉपीराइट और जी०आई० टैग को सुदृद्ध करना चाहिए जिससे डिजाइन चोरी पर नियन्त्रण हो सके।
3. ई–मार्केट प्लेस का निर्माण हो जिससे पारम्परिक कलाकार की पहुँच सीधे उपभोक्ता तक हो सके।
4. राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर डिजिटल अभिलेखागार तथा वर्चुअल संग्राहलय स्थापित किए जाएँ।
5. विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों पर सांस्कृतिक शिक्षा का समावेश किया जाएँ तथा पारम्परिक कला और डिजिटल तकनीक के समन्वय पर आधारित पाठ्यक्रम तैयार किए की जाएँ।

Paper: Received: 03.06.2026 Reviewed: 11.06.2026 Accepted: 18.06.2026 Published: 27.06.2026

6. निजी क्षेत्र और सरकार की भागीदारी (पी०पी०पी०) मॉडल के माध्यम से सांस्कृतिक उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाएँ।
7. तकनीक और परम्परा के मध्य सन्तुलन स्थापित करने का प्रयास किए जाएँ।

पारम्परिक कला मात्र अतीत की धरोहर ही नहीं है अपितु वर्तमान समाज की जीवन शक्ति है, परिवर्तन अवसर और चुनौती दोनों साथ लेकर आता है यदि परम्परा और तकनीक के मध्य सन्तुलन बना कर रखा जाए, तो यह पारम्पारिक कला डिजिटल युग में भी नए–नए आयाम प्राप्त कर सकती है।

संदर्भः–

1. हाण्डा ओमचन्द्र, पश्चिमी हिमालय की लोक कलाएँ, इण्डस पब्लिकेशन कं० 1988
2. कुरूक्षेत्र ग्रामीण पर्यटन विशेषांक प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार जून 2022 व नवम्बर 2025
3. योजना कला एवं संस्कृति विशेषांक, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार मार्च–2024
4. चतक गोविन्द भारतीय लोक संस्कृति का सन्दर्भ मध्य हिमालय, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली 1966
5. बबीता, थारू एवं बुक्सा जनजाति की कला और संस्कृति, कलाकार पब्लिशर्स प्रा0 लि0–2023
6. बंसल एस0सी0, पर्यटन भूगोल, राजेश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2025
7. मनीषा अग्रवाल, डिजिटल युग में पारम्परिक कला के स्वरूप, योजना, मार्च 2024

Paper: Received: 03.06.2026 Reviewed: 11.06.2026 Accepted: 18.06.2026 Published: 27.06.2026